

## इकाई 3 भारत : आवश्यक तत्व

### संरचना

#### 3.1 प्रस्तावना

#### 3.2 उद्देश्य

#### 3.3 भौगोलिक विविधता

#### 3.4 भाषायी विविधता

#### 3.5 सांस्कृतिक विविधता

##### 3.5.1 संजातीय (नृजातीय) विविधताएं

#### 3.6 धार्मिक विविधता

#### 3.7 सामाजिक स्तरीकरण

##### 3.7.1 सामाजिक स्तरीकरण के आधार

#### 3.8 सारांश

#### 3.9 प्रगति की जांच

#### 3.10 सन्दर्भ सूचि

### 3.1 प्रस्तावना

भारत एक विभिन्नता युक्त समाज है। भौगोलिक बनावट, जलवायु, जनसंख्या, प्रजाति, धर्म, इतिहास, राजनीति, भाषा, संस्कृति एवं समाज व्यवस्था की दृष्टि से भारत के विभिन्न भागों में अनेक विषमताएं पायी जाती हैं। इन विभिन्नताओं के बावजूद भी विभिन्न लोगों, जातियों एवं समुदायों के बीच एक अनोखी समानता एवं एकता भारत में सदैव विद्यमान रही है। भारत के उत्तर में हिमालय, दक्षिण में पठार एवं समुद्र तट, पश्चिम में थार का रेगिस्तान, पूर्व में पहाड़ी भाग एवं मध्य में मैदानी भाग ने यहां की सामाजिक-आर्थिक एवं राजनीति व्यवस्था एवं संस्कृति को प्रभावित किया है। पहाड़ी, मैदानी, पठारी एवं समुद्रतटीय क्षेत्रों के निवासियों के खान-पान, पहनावे, भाषा, रहन-सहन, प्रथाओं, त्योहारों एवं

उत्सवों में विभिन्नताएं पायी जाती हैं। फिर भी सम्पूर्ण भारत एक संगठित इकाई एवं राष्ट्र है। भारतीय संविधान में इस एकता को बनाये रखने का आश्वासन दिया गया है और सभी धर्मों, भाषाओं, प्रान्तों, जातियों एवं प्रजातियों के लोगों के हितों की रक्षा करने एवं देश के पिछड़े, दुर्बल एवं निर्धन लोगों के उत्थान के लिए कल्याणकारी योजनाएं बनाने की बात कही गई है।

### 3.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् छात्र –

- 1) छात्र भारत की विविधता को जान सकेंगे।
- 2) देश की विभिन्न भौगोलिक स्थितियों से अवगत हो सकेंगे।
- 3) देश में मौजूद विभिन्न भाषायी संस्कृति से परिचित हो सकेंगे।
- 4) भारत में विद्यमान सांस्कृतिक विविधता को समझ सकेंगे।
- 5) विभिन्न धार्मिक मत को जान सकेंगे व उनके प्रति सकारात्मक व समान दृष्टिकोण अपना सकेंगे।
- 6) सामाजिक स्तरीकरण के पहलुओं से अवगत हो सकेंगे।
- 7) भारत में मौजूद धर्म की बहुलता व विविधता का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- 8) भारत के विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों से परिचित हो सकेंगे।
- 9) भारतीय समाज में स्थित विभिन्न वर्गों की सामाजिक स्थिति से परिचित हो सकेंगे।

### 3.3 भौगोलिक विविधता

भारत के निवासियों, उनकी समाज-व्यवस्था, सभ्यता और संस्कृति की विभिन्नता एवं एकता को जानने से पूर्व उनकी भौगोलिक पृष्ठभूमि को जान लेना आवश्यक है क्योंकि भौगोलिक परिस्थितियां मानव के धर्म, दर्शन, कला, सभ्यता, संस्कृति, संस्थाओं, आदि सभी पक्षों को प्रभावित करती हैं।

भारत एशिया, महाद्वीप का एक भाग है, जो उत्तरी गोलार्द्ध में स्थित है। इसकी मुख्य भूमि 8°4' से 37°6' उत्तरी अक्षांश तथा 68°7' से 97°25' पूर्वी देशान्तर के बीच फैली हुई है। इसका विस्तार उत्तर से

दक्षिण तक 3,214 किलोमीटर और पूर्व से पश्चिम तक 2,933 किलोमीटर है। इसका क्षेत्रफल 32,87,263 वर्ग किलोमीटर है। भारत की स्थलीय सीमा 15,200 किलोमीटर है और समुद्र तट 7,516.6 किलोमीटर। क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत विश्व का 40वां भाग है तथा विस्तार की दृष्टि से संसार में भारत का सातवां स्थान है। भारत की प्राकृतिक सीमाएं इसे अन्य देशों से पृथक् करती हैं। उत्तर में हिमालय पर्वत फैला हुआ है, जो इसे चीन, तिब्बत और एशिया के शेष भागों से पृथक् करता है। दक्षिण में तीन ओर समुद्र इसके चरण धोता है। उत्तर में चीन, नेपाल और भूटान एवं पूर्व में म्यांमार (बर्मा) और पश्चिम बंगाल के पूर्व में बांग्लादेश स्थित है तथा उत्तर-पश्चिम में पाकिस्तान और अफगानिस्तान से इसकी सीमा जुड़ी हुई है। मन्नार की खाड़ी और पाक जलडमरूमध्य भारत को श्रीलंका से अलग करते हैं। इस प्रकार उत्तर में विशाल पर्वत-श्रेणियों और दक्षिण में अथाह समुद्र ने भारत भूमि की विदेशी आक्रमणकारियों से रक्षा की है। भारत की भौगोलिक सीमाओं ने यहां की समाज-व्यवस्था और लोगों को विश्व के अन्य समाजों से भिन्न बनाया है। इस देश के निवासियों की वेश-भूषा, भाषा, धर्म, दर्शन, ज्ञान, कला, विधि-विधान, सभ्यता एवं संस्कृति की अपनी मौलिकता है, जिसका विकास अधिकांशतः इसी धरती पर हुआ है। भारतीयों की विलक्षणताका विश्व में एक विशिष्ट स्थान है। भारत की भौगोलिक स्थिति ने इसे एक स्वतन्त्र सांस्कृतिक क्षेत्र बनाये रखा और समस्त ऐतिहासिक युग में इसे विदेशी संस्कृतियों और विजातीय प्रभावों से मुक्त रखा।

इस देश का एक अन्य नाम 'हिन्दुस्तान' व 'इण्डिया' भी हैं। चूंकि यहां सिन्धु नदी बहती है, अतः उसी के आधार पर इस क्षेत्र को 'सिन्धु का प्रदेश' कहा गया। फारस निवासी 'स' का उच्चारण 'ह' करते थे, अतः उन्होंने सिन्धु का उच्चारण 'हिन्दु' किया और उसी आधार पर सिन्धु प्रदेश 'हिन्दुस्तान' कहलाया और यहां के निवासियों को 'हिन्दू' कहा गया। प्राचीन ग्रीक लोग सिन्धु नदी को 'इण्डस' और इसके समीपवर्ती क्षेत्र को 'इण्डिया' कहते थे। इसलिए भारत को 'इण्डिया' भी कहा जाता है।

भारत की जलवायु में भी भिन्नताएँ देखने को मिलती हैं। जहाँ उष्ण, शीतोष्ण और शीत तीनों प्रकार की जलवायु पाई जाती हैं यदि एक ओर लद्दाख में हड्डियों तक को कंपा देने वाली सर्दी है, तो दूसरी ओर झुलसा देने वाली राजस्थान के रेगिस्तान की गर्मी भी है। कोंकण और कारोमण्डल तट पर नमी और गर्मी, मालाबार की आर्द्र जलवायु और मालवा की समशीतोष्ण जलवायु भी है। जहाँ एक ओर असम, बंगाल, हिमाचल के दक्षिणपूर्वी ढाल तथा मालाबार तट पर वर्ष में 100 से.मी. से अधिक वर्षा होती है, वहाँ दूसरी ओर कच्छ, राजस्थान व पंजाब के दक्षिणी भाग में 5 से.मी. से भी कम वर्षा होती है।

भौगोलिक दृष्टि से भारत के पांच प्राकृतिक भाग हैं : उत्तर का पर्वतीय प्रदेश, गंगा-सिन्धु का मैदान, दक्षिण का पठार, राजस्थान का मरुस्थल तथा समुद्रतटीय मैदान।

1) **उत्तर का पर्वतीय प्रदेश** — उत्तर में कश्मीर से नेफा तक 1,600 मील लम्बी एवं 150 से 200 मील चौड़ी हिमालय पर्वतमालाएं फैली हुई हैं। इसमें अनेक दर्रे, ऊंची चोटियां एवं घाटियां हैं। विश्व का सर्वोच्च शिखर 'एवरेस्ट' (29,002 फीट) यहीं स्थित है। हिमालय पर्वत श्रेणियों ने सदैव ही बाह्य आक्रमणकारियों से देश की रक्षा की है। इस क्षेत्र में अनेक धार्मिक, दार्शनिक, प्राकृतिक एवं स्वास्थ्यवर्धक स्थल हैं जहां प्रति वर्ष हजारों पर्यटक एवं तीर्थयात्री जाते हैं। बद्रीनाथ, केदारनाथ और ऋषिकेश यहां के प्रसिद्ध तीर्थ-स्थल हैं। यह क्षेत्र भगवान शिव की तपोभूमि है। अल्मोड़ा, कश्मीर, नैनीताल, मंसूरी, दार्जिलिंग एवं अनेक अन्य नयनाभिराम स्थानों से यह क्षेत्र परिपूर्ण है। अत्यधिक ऊंचाई के कारण इस क्षेत्र में बर्फ जमी रहती है और यह वर्षभर बहने वाली अनेक नदियों का उद्गम स्थल भी है। गंगा, यमुना, सरयू, ब्रह्मपुत्र और सिन्धु नामक नदियों की यह जन्मभूमि है। पवित्र कैलाश पर्वत, मानसरोवर झील एवं अल्मोड़ा जैसे रमणीक स्थल इसी क्षेत्र में हैं।

यह क्षेत्र अनेक प्रकार की कीमती लकड़ी, जड़ी-बूटियां, फल, खाद्य-पदार्थ और जीवन की हजारों प्रकार की आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाली वस्तुएं प्रदान करता है। इस क्षेत्र में हिन्दुओं के अतिरिक्त नागा, अका, गारो, मिकिर, अबोट आदि अनेक जनजातियां रहती हैं। इस क्षेत्र में स्थित दर्रे के द्वारा भारत का विदेशों से सम्पर्क एवं व्यापार होता रहा है, ये भारत के प्रवेश-द्वार हैं।

2) **गंगा-सिन्धु का मैदान** — हिमालय से लेकर दक्षिणी पठार के बीच का मैदानी भाग उत्तर का बड़ा मैदान कहलाता है जो गंगा, सिन्धु, ब्रह्मपुत्र तथा सतलज नदियों के कारण अत्यधिक उपजाऊ है। यही कारण है कि बाह्य आक्रमणकारी इसे अपने अधिकार में करने के लिए लालायित रहे। यह मैदान 2,400 किमी लम्बा और 240 से 320 किमी चौड़ा है और इसका क्षेत्रफल लगभग 3,00,000 वर्गमील है। देश की लगभग 40% जनसंख्या इसी क्षेत्र में निवास करती है और यहां का जन-घनत्व भी ऊंचा है। यह क्षेत्र भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का उद्भव-स्थल एवं बाह्य संस्कृतियों का संगम-स्थल रहा है। हरिद्वार, प्रयाग और वाराणसी जैसे पवित्र तीर्थ स्थल यहां स्थित हैं। राजनीतिक, सामाजिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से यह क्षेत्र बहुत ही महत्वपूर्ण है। इसी क्षेत्र में अनेक वैभवशाली साम्राज्यों का उदय हुआ एवं विशाल नगरों की स्थापना हुई। इस क्षेत्र में कृषि की प्रधानता है। यह क्षेत्र भारत की सभ्यता व संस्कृति का उद्गम-स्थल रहा है।

3) **दक्षिण का पठार** — भारत का दक्षिणी भाग प्रायद्वीप है जो एक पठारी प्रदेश है तथा तीन ओर से समुद्र से घिरा हुआ है। उत्तर के बड़े मैदान से विन्ध्या एवं सतपुड़ा की पर्वतश्रेणियों द्वारा यह भाग अलग हो जाता है। इसका आकार एक त्रिभुज के समान है। यह भाग देश का प्राचीनतम भाग है और अनेक प्रकार की बहुमूल्य धातुओं से परिपूर्ण है। इस क्षेत्र में भी घने जंगल हैं तथा यहां भारत ही नहीं विश्व की प्राचीनतम जनजातियां जैसे ईरुला, कदार, चेंचू, माला-पान्त्रम, आदि रहती हैं। बहुपति विवाही टोडा एवं कोटा तथा मातृसत्तात्मक नायर भी इसी क्षेत्र में निवास करते हैं। भारत के मूल निवासी

द्रविड़ों का मुख्य निवास यही है, अतः यहां द्रविड़ संस्कृति की प्रधानता पायी जाती है। प्राचीन समय में यहां पल्लव, चोल, चालुक्य, आदि साम्राज्य स्थापित हुए। यह मराठों की भी कर्मभूमि रहा है।

4) **राजस्थान का मरुस्थल** – गंगा की घाटी के पश्चिम की ओर एक शुष्क रेतीला भाग है, जो थार के मरुस्थल के नाम से जाना जाता है। रेगिस्तान के कारण ही सिन्ध से उत्तर की ओर विदेशियों के आक्रमण विफल होते रहे हैं। सोमनाथ से वापस जाते समय महमूद गजनवी की विजय-वाहिनी इसी मरुभूमि में लगभग लुप्त हो गयी। धरातल में पानी के अभाव और वर्षा की कमी के कारण यह क्षेत्र बहुत कम उपजाऊ है। यह क्षेत्र रणबांकुरे राजपूत राजाओं द्वारा शासित रहा है जो अपनी आन-बान-शान और बलिदान के लिए जगप्रसिद्ध हैं। यहां की जौहर एवं सती प्रथाएं इतिहास में अनूठा उदाहरण पेश करती हैं। यहां के निवासियों की संस्कृति, प्रथाएं, वेश-भूषा एवं खान-पान देश के अन्य भागों से भिन्न हैं तथा यहां की जलवायु में अत्यधिक विषमता पायी जाती है।

5) **समुद्रतटीय मैदान** – दक्षिणी पठारी प्रदेश के पूरब और पश्चिम में समुद्रतटीय मैदान स्थित है। पश्चिम के समुद्रतटीय भाग को कोंकण तथा मालाबार कहते हैं। यह भाग पूर्वी तट की अपेक्षा कम चौड़ा है। इसकी औसत चौड़ाई 65 किलोमीटर है। पूर्व मैदानी भाग को तमिलनाडु तथा आन्ध्र-उड़ीसा तट भी कहते हैं। पूर्व एवं पश्चिमी समुद्रतटीय प्रदेशों में भारत के प्रसिद्ध बन्दरगाह; जैसे मुम्बई, सूरत, सोपारा, कालीकट, कोच्चि, गोआ, चेन्नई, विशाखापट्टनम आदि स्थित हैं। दक्षिणी पठारी भाग का ढाल पूर्व की ओर होने से दक्षिण की सभी नदियां पूर्वी समुद्र तट से होकर समुद्र में गिरती हैं। अतः अनेक स्थानों पर यह भाग नदियों द्वारा खण्डित कर दिया गया है। समुद्रतटीय बन्दरगाहों ने प्राचीन काल से ही भारत का व्यापारिक तथा सामाजिक-सांस्कृतिक सम्पर्क विभिन्न देशों; जैसे म्यांमार, स्याम, हिन्द-चीन, जावा, सुमात्रा, अरब, ईरान एवं फारस की खाड़ी के प्रदेशों से बनाये रखा है। हिन्दुओं का पवित्र तीर्थस्थल रामेश्वरम् भी यहीं स्थित है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि भारत की भौगोलिक रचना विविधता लिये हुए है। प्रत्येक भौगोलिक खण्ड की अपनी भाषा, संस्कृति, वेश-भूषा, कृषि, व्यापार आदि से सम्बन्धित विशिष्ट विशेषताएं हैं। भौगोलिक क्षेत्र ने यहां के निवासियों के जीवन और संस्कृति को अत्यधिक प्रभावित किया है और उसे विशिष्ट रूप प्रदान किया है।

### 3.3 अधिगम क्रियाकलाप

- 1) उत्तर की विशाल पर्वतमालाओं की नदियों, पर्वतों, पर्वतीय स्थलों, चोटियों, भू-लक्षणों, घाटियों के महत्व को जान लेने के पश्चात् आप भारत के विशाल मैदान, उसके विस्तार, प्रमुख नदियों और उनकी सहायक नदियों तथा उस मैदानी इलाके के महत्व की चर्चा कर सकते हैं।

- 2) भारत के भौतिक (प्राकृतिक) मानचित्र पर छात्रों से उस विशाल मैदान की भौगोलिक स्थिति पूछिए जो उत्तर की विशाल पर्वतमाला के दक्षिण में स्थित है।

### बोध प्रश्न

टिपणी

क) अपने उत्तर नीचे दिए गए स्थान पर लिखिए.

[I) अपने उत्तरों को इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाईये.

1. भारत के प्रमुख पांच भौगोलिक क्षेत्रों के नाम बताइए.

.....

.....

.....

.....

2. भारत के उत्तर व पश्चिम में कौन से देश स्थित हैं ?

.....

.....

.....

3. गंगा सिन्धु का मैदान कहाँ स्थित है ?

.....

.....

### 3.4 भाषायी विविधता

भारत एक बहुभाषी राष्ट्र है। भारत में जनसंख्या, प्रजाति, धर्म एवं संस्कृति के आधार पर ही विभिन्नता नहीं पाई जाती वरन् भाषा की दृष्टि से भी अनेक भिन्नताएं विद्यमान हैं। भाषायी सर्वेक्षणों से यह ज्ञात हुआ है कि यहां लगभग 179 भाषाएं तथा 544 बोलियां प्रचलित हैं। भारतीय भाषाओं एवं बोलियों के अध्ययन में जार्ज ग्रियर्सन का नाम उल्लेखनीय है। कुछ विद्वानों का मत है कि भारत में 1,650 भाषाएं एवं बोलियां पाई जाती हैं। प्रत्येक भौगोलिक क्षेत्र या उप-क्षेत्र की अपनी एक भाषा या बोली है। भारत

के ग्रामीण क्षेत्र में भाषा की विविधता एवं बहुलता को प्रकट करने वाली एक कहावत प्रचलित है — 'पांच कोस में बदले पानी, दस कोस में बानी।' प्रत्येक दस कोस (20 मील) के बाद भाषा में बदलाव आ जाता है। भाषा के साथ-साथ सांस्कृतिक विशेषताओं में भी अन्तर देखने को मिलता है। भाषायी क्षेत्र ने भारतीयों के सामाजिक जीवन को भी प्रभावित किया है और एक भाषा का प्रयोग करने वालों ने अपने सम्बन्ध अपने भाषायी क्षेत्र तक ही सीमित रखे हैं। श्रीमती कर्वे का मत है कि यदि हम भारतीय संस्कृति को समझना चाहते हैं तो हमें जाति एवं परिवार के साथ-साथ यहां के भाषायी क्षेत्र का भी अध्ययन करना होगा। भाषा के साथ संस्कृति एवं धर्म भी जुड़े हुए हैं, विभिन्न धर्मावलम्बी अपनी-अपनी अलग-अलग भाषा मानते हैं, जैसे हिन्दू संस्कृत एवं हिन्दी भाषा को, मुसलमान अरबी एवं उर्दू को, सिक्ख गुरुमुखी को और बौद्ध प्राकृत एवं पाली भाषा को।

भारत में कुछ भाषाएं तो बहुत समृद्ध हैं, उनमें से हिन्दी, पंजाबी, कश्मीरी, सिन्धी, मराठी, गुजराती, तमिल, कन्नड़, मलयालम, उर्दू, उड़िया, बंगाली और असमिया प्रमुख हैं। भारत में जितनी भी भाषाएं पाई जाती हैं, उन्हें प्रमुखतः तीन भाषा परिवारों में बांटा गया है —

(1) **इण्डो-आर्यन परिवार** — इसके अन्तर्गत हिन्दी, उर्दू, बंगला, असमिया, उड़िया, पंजाबी, सिन्धी, मराठी, गुजराती, राजस्थानी, बिहारी, हिमाली, आदि भाषाएं आती हैं।

(2) **द्रविड़ भाषा परिवार** के अन्तर्गत तेलुगु, कन्नड़, तमिल, मलयालम एवं गोंडी, आदि भाषाएं आती हैं।

(3) **आस्ट्रिक भाषा परिवार** में मुण्डारी, संथाली, खासी, हो, खरिया, बिरहोर, भूमिज, कोरबा, कोरकू एवं जुआंग, आदि भाषाएं प्रमुख हैं। इनके अतिरिक्त चीनी-तिब्बती परिवार की भाषाएं; जैसे मणिपुरी, नेवाड़ी, लेपचा एवं नगा भाषा का प्रयोग भी किया जाता है।

भारतीय संविधान में 22 भाषाओं को मान्यता प्रदान की गई है, वे हैं — असमिया, बंगाली, गुजराती, हिन्दी, कन्नड़, कश्मीरी, मलयालम, मराठी, उड़िया, पंजाबी, संस्कृत, सिन्धी, तमिल, तेलुगु, उर्दू, कोंकणी, मणिपुरी, नेपाली, बोड़ो, डोगरी, मैथिली तथा संथाली। इनमें से प्रत्येक की अपनी एक लिपि है। इनमें हिन्दी का सर्वप्रथम स्थान है। इनके अतिरिक्त मालवी, भोजपुरी, मारवाड़ी एवं पहाड़ी भाषाएं भी महत्वपूर्ण हैं। कुछ भाषाओं को बोलने वालों की संख्या पांच-पांच लाख है, तो कुछ को बोलने वालों की लगभग एक-एक लाख।

हिन्दी भाषा को बोलने वालों की संख्या सर्वाधिक है। 33.72 करोड़ व्यक्ति इस भाषा को बोलते हैं और इसे बोलने वाले विशेषकर उत्तर प्रदेश में रहते हैं। इसके बाद क्रमशः बंगला व तेलुगु भाषाओं का स्थान है। उन भाषाओं को बोलने वालों की संख्या क्रमशः 6.95 करोड़ तथा 6.60 करोड़ है। इसके बाद भाषा को बोलने वालों की संख्या के आधार पर हम इस देश की विभिन्न भाषाओं को इस क्रम से प्रस्तुत कर सकते हैं — मराठी, तमिल, उर्दू, गुजराती, मलयालम, कन्नड़, बिहारी, उड़िया, राजस्थानी, पंजाबी,

असामी, संथाली, भीली, कश्मीरी, गोंड़ी यथा सिंधी। संस्कृत भाषा को बोलने वालों की संख्या केवल 4,664 है। इन भाषाओं को चार अलग-अलग भाषा-परिवारों आर्यन्, द्राविड़यन्, आस्ट्रिक और चीनी-तिब्बती भाषा-परिवार से सम्बद्ध किया जा सकता है।

### 3.4 अधिगम क्रियाकलाप

1. अपने संपर्क में स्थित विविध भाषायी विद्यार्थियों से किन्हीं दस भाषाओं के गीत या ऑडियो एकत्रित कीजिए।
2. अपने क्षेत्र के आसपास बोली जाने वाली भाषाओं व बोलियों को सूचीबद्ध कीजिये

### बोध प्रश्न

टिपण्णी

क) अपने उत्तर नीचे दिए गए स्थान पर लिखिए.

[I) अपने उत्तरों को इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाईये

4. भारत में लगभग कितनी भाषाएँ बोली जाती हैं ?

.....  
.....

5. द्रविड भाषा परिवार में कौन सी भाषाएँ प्रमुख रूप से आती हैं ?

.....  
.....  
.....  
.....

### 3.5 सांस्कृतिक विविधता



भारत विभिन्नताओं का देश है। प्रजाति, जाति, जनजाति, धर्म, भाषा, जलवायु, भौगोलिक परिस्थितियाँ, खान-पान, रहन-सहन और वेश-भूषा की दृष्टि से यहां कई विभिन्नताएं दिखायी देती हैं। ये सब विशेषताएं या भिन्नताएं भारतीय समाज के मौलिक आधारों और उनमें होने वाले परिवर्तनों को समझने में सहायक हैं तथा ये भारतीय समाज में अनेकता भी पैदा करती हैं।

भारत एक ऐसा देश है, जिसमें विविधता के अनेक आयाम दृष्टिगोचर होते हैं, यहां अनेक संस्कृतियों का सहअस्तित्व पाया जाता है। भारत में समय-समय पर अनेक बाह्य आक्रमणकारी लोग आते रहे और उन्होंने यहां शासन किया। यहां से धन सम्पत्ति लूट कर ले जाने के बजाय अधिकांश लोग यहीं बस गये। इस प्रकार भारत अनेक संस्कृतियों का संगम-स्थल एवं द्रवण-पात्र बन गया। सांस्कृतिक बहुलता भारत की नियति बन गई। यही कारण है कि भारत में विभिन्न धर्मों, भाषाओं, प्रथाओं, रीति-रिवाजों, खान-पान, वेश-भूषा, विचारों, विश्वासों, संस्कारों आदि के रूप में बहुलता पायी जाती है। विभिन्न संस्कृतियों का भारत में सह-अस्तित्व ही सांस्कृतिक बहुलतावाद के नाम से जाना जाता है। यहां सांस्कृतिक बहुलतावाद को अनेक रूपों में देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए, एक तरफ बहुत धनी, उच्च जाति और उच्च वर्ग के लोग हैं, तो दूसरी ओर अत्यधिक निर्धन, निम्न जाति के लोग हैं। विभिन्न जातियों, धर्मों, क्षेत्रों और भाषाओं से सम्बद्ध समूह सारे देश में फैले हुए हैं। धर्म, भाषा, क्षेत्र, प्रथा और परम्परा के आधार पर यहां अल्पसंख्यक समूह बने हुए हैं। बहुसंख्यक समूह भी अनेक सम्प्रदायों, जातियों, गोत्रों और भाषायी समूहों में विभक्त हैं। अपने सदस्यों के लिए अच्छी शिक्षा, रोजगार और जीवन-स्तर प्राप्त करने की इन समूहों में आकांक्षाएं हैं। सभी लोगों को समान अवसर प्राप्त नहीं हैं, इसलिए वे 'वितरक-न्याय' से वंचित हैं। इस प्रकार की असमानता स्वयं भारतीय समाज की देन है, जिसके कारण समय-समय पर तनाव एवं संघर्ष पैदा होते रहते हैं, परस्पर अविश्वास एवं मानसिक कुंठाएं भी बढ़ती हैं।

इन कारणों से भारत की आन्तरिक एकता, सम्बद्ध चेतना और भारतीयता की भावना को गहरा आघात लगा है। यह स्थिति भारतीय सामाजिक संरचना के स्वरूप और वास्तविकता के बीच भेद के कारण उत्पन्न हुई है। अब हम यहां भारतीय समाज एवं समुदाय में व्याप्त सांस्कृति एवं संजातीय विविधताओं को जानने का प्रयास करेंगे।

### 3.5.1 संजातीय (नृजातीय) विविधताएं

नृजातिकी अथवा संजातीयता को रंग और संस्कृति के आधार पर विश्लेषित किया जा सकता है। नृजातिकी समूह किसी समाज की जनसंख्या का वह भाग है, जो परिवार की पद्धति, भाषा, मनोरंजन, प्रथा, धर्म, संस्कृति एवं उत्पत्ति, आदि के आधार पर अपने को दूसरों से अलग समझता है। दूसरे शब्दों में, एक प्रकार की भाषा, प्रथा, धर्म, परिवार, रंग एवं संस्कृति से सम्बन्धित लोगों के एक समूह को नृजातिकी की संज्ञा दी जा सकती है। समान इतिहास, प्रजाति, जनजाति, वेश-भूषा, खान-पान वाला

सामाजिक समूह भी एक नृजातीय समूह है, जिसकी अनुभूति उस समूह एवं अन्य समूहों के सदस्यों को होनी चाहिए। समान आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक हितों की रक्षा एवं अभिव्यक्ति करने वाले समूह को भी संजातीय समूह कहा जा सकता है। एक नृजातिकी समूह की अपनी एक संस्कृति होती है, अतः नृजातिकी एक सांस्कृतिक समूह भी है। भारत एक बहु-नृजातिकी समूह वाला देश भी है।

एक नृजातिकी के लोगों में परस्पर प्रेम, सहयोग एवं संगठन पाया जाता है, उनमें अहम् की भावना पायी जाती है। एक नृजातिकी के लोग दूसरी नृजातिकी के लोगों से अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए अपनी भाषा, वेश-भूषा, रीति-रिवाज एवं उपासना पद्धति की विशेषताओं को बढ़ा-चढ़ा कर बताते हैं। समाजशास्त्रीय भाषा में इसे नृजातिकी केन्द्रित प्रवृत्ति कहते हैं। नृजातिकी के आधार पर एक समूह दूसरे समूह से अपनी दूरी बनाये रखता है। सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक दृष्टि से शक्तिशाली नृजातिकी समूह कमजोर नृजातिकी समूह का शोषण करता है, उनके साथ भेद-भाव रखते हैं। इससे समाज में असमानता, संघर्ष एवं तनाव पैदा होता है। भाषा, धर्म और सांस्कृतिक विभेद, संजातीय समस्या के मुख्य कारण हैं। भारत में भाषा, धर्म, सम्प्रदाय एवं प्रान्तीयता की भावना के कारण अनेक तनाव एवं संघर्ष हुए हैं।

कभी-कभी सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए लोगों का एक संजातीय समूह के रूप में एकत्रीकरण देखा जा सकता है। ऐसी स्थिति में वे अन्य समूहों के साथ विदेशियों जैसा व्यवहार करते हैं। बिहार का छोटा नागपुर एवं संथाल परगना के आदिवासी अपनी विशिष्ट संस्कृति एवं भाषा के कारण एक अलग झारखण्ड राज्य का निर्माण करवा चुके हैं। वे आदिवासियों के अतिरिक्त लोगों को 'दीक्क' अर्थात् बाह्य शोषणकर्ता की संज्ञा देते हैं, जिसमें जमींदार और साहूकारों को सम्मिलित करते हैं।

कभी-कभी ऐसा ही व्यवहार एक भाषा बोलने वाले अपने प्रान्त में दूसरी भाषा बोलने वालों के साथ भी करते हैं। तमिलनाडु एवं असम में अन्य प्रान्तों के लोगों को बाहर निकालने सम्बन्धी आन्दोलन एवं संघर्ष हुए हैं। कई बार नगरीय लोग गांव वालों के साथ एवं ग्रामीण नगर वालों के साथ भी विदेशियों जैसा व्यवहार करते हैं और उसे संजातीय रूप देने का प्रयत्न करते हैं।

### 3.5 अधिगम क्रियाकलाप

किन्हीं 10 जनजातियों की प्रमुख वेशभूषा व खानपान की एक सूची बनाइए।

### बोध प्रश्न

टिपण्णी क) अपने उत्तर नीचे दिए गए स्थान पर लिखिए.

[I) अपने उत्तरों को इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाईये

6. सांस्कृतिक बहुलतावाद की विवेचना कीजिये

.....

.....

.....

.....

.....

### 3.6 धार्मिक विविधता

प्राचीन काल से भारत विभिन्न धर्मों की पुण्य भूमि रहा है। प्रजातियों की भाँति हमारे देश में धर्मों में भी भिन्नताएँ हैं। यहाँ एकाधिक धर्म और उसके अनुयायी कितने ही वर्षों से साथ-साथ रहते हैं और अब भी रह रहे हैं। विश्व में शायद ही कोई अन्य ऐसा देश है जिसमें धर्मों की इतनी विविधता एवं बहुलता पाई जाती हो। भारतीयों के जीवन में धर्म का प्रमुख स्थान है। यहां मुख्य रूप से छः धर्मों — हिन्दू, इस्लाम, ईसाई, सिख, बौद्ध तथा जैन की प्रधानता है, कुछ पारसी एवं जनजातीय धर्मों को मानने वाले लोग भी हैं। मुख्य धर्मों में भी अनेक सम्प्रदाय और मत-मतान्तर पाए जाते हैं। केवल हिन्दू धर्म के ही विविध सम्प्रदाय व मत सारे देश में फैले हुए हैं, जैसे वैदिक धर्म, पौराणिक धर्म, सनातन धर्म, शक्त धर्म, शैव धर्म, वैष्णव धर्म राजा बल्लभ सम्प्रदाय, नानकपन्थी, आर्यसमाजी आदि। इनमें से कुछ धर्म साकार ईश्वर की पूजा करते हैं तो कुछ धर्म निराकार ईश्वर की आराधना करते हैं; कोई धर्म बलि और यज्ञ पर बल देता तो कोई अहिंसा का पुजारी है; किसी धर्म में शक्ति-मार्ग की प्रधानता है तो किसी में ज्ञानमार्ग की। इस्लाम में शिया और सुन्नी; ईसाई धर्म में प्रोटेस्टैण्ट तथा कैथोलिक; सिख धर्म में अकाली एवं गैर-अकाली; बौद्ध धर्म में हीनयान और महायान; जैन धर्म में श्वेताम्बर एवं दिगम्बर आदि प्रमुख

सम्प्रदाय हैं। प्रत्येक सम्प्रदाय की भी अनेक शाखाएं और उप-शाखाएं हैं। इस्लाम, ईसाई और पारसी धर्म विदेशों से यहां आए जबकि हिन्दू, बौद्ध, जैन तथा सिख धर्मों की जन्म-स्थली भारत ही है। बौद्ध, जैन तथा सिख धर्मों को हिन्दू धर्म का ही अंग माना जाता है। धार्मिक विविधता के कारण समय-समय पर विभिन्न धर्मावलम्बियों के बीच यहां तनाव एवं संघर्ष भी उत्पन्न होते रहे हैं और इन्होंने राष्ट्रीय एकता के मार्ग में बाधा भी उत्पन्न की है यद्यपि भारत में धार्मिक सहिष्णुता एवं समन्वय के तत्व भी मौजूद रहे हैं।

भारत के विभिन्न क्षेत्रों में बसने वाले लोगों के देवी-देवता व पूजा के तौर-तरीकों में पर्याप्त भिन्नताएँ देखने को मिलती हैं। स्थानीय व क्षेत्रीय आधारों पर भी अनेक व्यक्तियों की पूजा व इबादत की जाती है। इसके अतिरिक्त विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न धार्मिक सम्प्रदायों के लोगों के निवास के कारण भी रीति-रिवाज व आचार-व्यवहार आदि में भिन्नताएँ दृष्टिगोचर होती हैं।

### 3.6 अधिगम क्रियाकलाप

विभिन्न धर्मों के मूल विश्वास व मान्यताओं – संदेशों को सूचीबद्ध कर उनमें मौजूद समानता पर एक चर्चा करें।

#### बोध प्रश्न

टिपण्णी      क) अपने उत्तर नीचे दिए गए स्थान पर लिखिए.

[I] अपने उत्तरों को इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाईये

7.      बौद्ध धर्म के प्रमुख सम्प्रदाय कौन से हैं ?

.....

.....

.....

### 3.7 सामाजिक स्तरीकरण

यंग एवं मेक के शब्दों में, “अधिकतर समाजों में व्यक्ति एक-दूसरे को विभिन्न वर्गों में वर्गीकृत करते हैं तथा इन वर्गों को उच्च से निम्न तक की विभिन्न श्रेणी में रखते हैं। इस प्रकार के वर्गीकरण की प्रक्रिया को सामाजिक स्तरण कहा जाता है तथा जो इसके परिणामस्वरूप प्राप्त श्रेणीबद्ध वर्गों की श्रृंखला होती है। उस को स्तरण संरचना कहा जाता है।

स्तरण की अनम्यता विभिन्न समाजों में विभिन्न होती है। कुछ में यह बहुत दृढ़ होती है जबकि दूसरों में नम्या की समान के अनुसार जितना भी अधिक बल जैविक सुरक्षा पर दिया जाएगा उतनी ही दृढ़ व्यवस्था के होने की संभावना है। उसके अनुसार समाजशास्त्री दो चरम स्थितियों को प्रस्तुत करते हैं। एक तो वह जिसमें सामाजिक स्थान आरोपित होते हैं। दूसरी वह जिसमें सामाजिक स्थान प्राप्त किये जाते हैं। जब सामाजिक स्थान आरोपित होते हैं तो वर्गीकरण में अनम्यता होती है और विभिन्न स्ट्रेटा का विभाजन अटूट होता है। जब यह विभाजन प्राप्त किया जाता है तो विलगता लचीली होती है और विभिन्न स्तरों के बीच में सामाजिक गतिशीलता सम्भव होती है। अमेरिका की वर्ग व्यवस्था दूसरे प्रकार के वर्गीकरण का उदाहरण है और भारत की जाति प्रणाली पहले वर्गीकरण में आती है।

भारतीय समाज एक बंद समाज है। उसमें विभिन्न वर्ग है। विभिन्नता हर पहलू से दृष्टिगोचर होती है। अतएव एक सार्थक प्रयास हमेशा किया जाता रहा है, जिससे इन विभिन्नताओं को दरकिनार कर एक सूत्र में समता स्थापित कर सकें। कोटारी कमीशन कहता है कि यदि हमें एक सम समाज का निर्माण करना है, तो जनता के सब वर्गों को अवसरों की समानता प्रदान करनी होगी, ताकि सभी वर्ग प्रगति के पथ पर अग्रसर हो।

#### 3.7.1 सामाजिक स्तरीकरण के आधार

सामाजिक स्तरीकरण निम्न प्रमुख आधार है

- 1) **जाति** – सी.एच. कुले के अनुसार, “जब एक वर्ग पूर्णतः अनुवांशिकता पर आधारित होता है तो हम उसे जाति कहते हैं।” जे.एच. हट्टन के अनुसार, “जाति एक ऐसी व्यवस्था है, जिसके अंतर्गत एक समाज अनेक आत्मकेंद्रित और एक दूसरे से पूर्णतः पृथक इकाइयों (जातियों) में बंटा रहता है। इन इकाइयों के बीच पारस्परिक संबंध ऊँच-नीच के आधार पर सांस्कृतिक रूप में निर्धारित होते हैं।”

भारतीय समाज में सामाजिक स्तरीकरण का स्थायी स्वरूप प्रमुख रूप से जाति व्यवस्था पर आधारित होता है। भारत में प्राचीनकाल से वर्ण व्यवस्था रही है। हिन्दू धर्म में चार मुख्य वर्ण माने गए हैं – ब्राह्मण, वैश्य, क्षत्रिय और शुद्र। इसमें जन्म पर आधारित सामाजिक विभाजन की

नीति को विशेष महत्व दिया जाता है। इस प्रकार जाति की उत्पत्ति को जन्म शब्द से ही मानना उचित जान पड़ता है। जाति व्यवस्था से व्यक्ति को जन्म से ही एक सामाजिक स्थिति प्राप्त होती है। इसमें आजीवन कोई परिवर्तन नहीं हो सकता। इसमें जातियों को एक दूसरे से अलग करने के लिए खान-पान, विवाह और धार्मिक रीति-रिवाजों के क्षेत्र में कुछ नियंत्रण होते हैं। इस स्थिति में एक जाति दूसरी जाति से कुछ सामाजिक दूरी बनाये रखती है। कुछ जातियाँ उच्च होती हैं और कुछ निम्न। इसलिए यहां एक सामाजिक स्तरीकरण देखने को मिलता है।

- 2) **वर्ग** — आगबर्न के अनुसार, “सामाजिक वर्ग की मौलिक विशेषता दूसरे सामाजिक वर्गों की तुलना में उच्च अथवा निम्न सामाजिक स्थिति है।”

वर्ग के आधार पर भी सामाजिक स्तरीकरण पाया जाता है। इस व्यवस्था में सभी सामाजिक वर्गों की स्थिति समान नहीं होती। सभी वर्ग कुछ श्रेणियों में विभक्त होते हैं, जिनमें कुछ का स्थान उच्च और कुछ का निम्न होता है। उच्च वर्ग के सदस्यों की संख्या कम होने पर उन्हें अधिक प्रतिष्ठा और अधिकार मिले होते हैं। सामाजिक वर्गों की तुलना पिरामिड से की जा सकती है। वर्ग चार होते हैं। उच्च, उच्च मध्यम, निम्न मध्यम व निम्न वर्ग। इनमें से प्रत्येक वर्ग अन्य और उप-वर्गों में विभक्त हो जाता है व इन वर्गों में सभी व्यक्ति समान आर्थिक स्थिति के नहीं होते। प्रत्येक वर्ग के लोग एक विशेष ढंग से जीवनयापन करते हैं। उदाहरण के लिए धनवान वर्ग अपव्यय, श्रेष्ठता को व उच्च मध्यम वर्ग आडम्बर व प्रदर्शनवाद को विशेष महत्व देता है। लेकिन वर्ग संरचना जाति संरचना से तुलनात्मक रूप से घुली हुई होती है। अर्थात् आर्थिक स्थिति और योग्यता में परिवर्तन के साथ ही व्यक्ति की वर्ग स्थिति में भी उतार-चढ़ाव आ सकता है।

कार्ल मार्क्स ने आर्थिक आधार को ही वर्ग संघर्ष का कारण माना व इसके आधार पर दो वर्ग बताएँ पूँजीपति व श्रमिक या सर्वहारा वर्ग। उन्होंने एक सामाजिक वर्ग को उसके उत्पादनों के साधनों और सम्पत्ति के विवरण संबंधों के संदर्भ में परिभाषित किया। बेबर के अनुसार वर्तमान युग में व्यक्ति की सामाजिक स्थिति को निर्धारित करने वाला आधार उसकी आर्थिक स्थिति ही है।

- 3) **धर्म** — धर्म के आधार पर भी समाज में स्तरीकरण है। भारत में विभिन्न धर्म हैं और हर धर्म की अपनी विशेष संस्कृति है। इनका खान-पान, रहन-सहन, रीति-रिवाज भी सब एक दूसरे से अलग है। एक धर्म का आवरण जन्म से ही स्थायी माना जाता है। कोई व्यक्ति सरलता से व अपनी सुविधा से धर्म नहीं बदल सकता। अपितु कुछ धर्म अपने धर्म की व्यापकता के लिए धर्म परिवर्तन के लिए कुछ नियमों पर यह सुविधा देते हैं। लेकिन समाज में इसकी स्वीकृति कम ही

होती है। बहुसंख्यक व अल्पसंख्यक के आधार पर भी सामाजिक स्तरीकरण का आधार प्रदान करता है।

- 4) **लिंग** – भारतीय समाज में लिंग भी सामाजिक स्तरीकरण का प्रमुख आधार है। भारतीय समाज पुरुष प्रधान समाज रहा है। अतः पुरुषों का स्थान महिलाओं से ऊपर माना जाता है। महिलाओं की स्थिति सामान्य रूप से पुरुषों से निम्न ही पायी जाती है। महिलाओं पर अधिक नियंत्रण है, सामाजिक नियम-निर्देश महिलाओं के लिए सख्त होते हैं, जिसका महिलाओं को कड़ाई से पालन करना होता है। केवल भारत के पूर्वोत्तर राज्य में मातृसत्तात्मक समाज व्यवस्था है। इसलिए वहां महिलाओं की सामाजिक स्थिति सम्मानीय है। बाकी भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति चिंतनीय है। उदाहरण के लिए यदि कोई दलित महिला मजदूर है, तो उसकी स्थिति समाज में सबसे निम्न होती है। क्योंकि दलित होने के कारण वह जाति में व आर्थिक रूप से वर्ग में निम्न है व महिला होने के कारण परिवार में भी उसकी स्थिति निम्न ही रहती है। अतः वह तीन प्रकार से समाज के शोषण की शिकार होती है। हालांकि शिक्षा, जागरूकता के द्वारा इस लिंग भेद को समाप्त करने के सार्थक प्रयास किये जा रहे हैं। ताकि समाज में इस लिंग भेदभाव को दूर करके एक समानता पर आधारित समाज का निर्माण किया जा सके।

### 3.7. अधिगम क्रियाकलाप

- विभिन्न जाति व प्रजातियों में स्त्रियों की सामाजिक स्थिति का तुलनात्मक विश्लेषण कीजिए।
- समाज के निम्न वर्ग की सामाजिक स्थिति में सुधार के लिए किए गये प्रयासों को सूचिबद्ध कीजिए।

### बोध प्रश्न

टिपण्णी क) अपने उत्तर नीचे दिए गए स्थान पर लिखिए.

[I) अपने उत्तरों को इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाईय

8. सामाजिक स्तरीकरण किसे कहते हैं ?

.....

- .....
- .....
- .....
9. कार्ल मार्क्स ने सामाजिक स्तरीकरण के कौन से आधार बताए ? व समाज को किन वर्गों में विभाजित किया ?
- .....
- .....
- .....
- .....

### 3-8 सारांश

भारत का आकार और क्षेत्रफल बहुत बड़ा है। इसका क्षेत्रफल अविभाजित रूस को छोड़कर समस्त यूरोप के क्षेत्रफल के बराबर तथा ग्रेट ब्रिटेन के क्षेत्रफल का बीस गुना है। इतने बड़े देश में भौगोलिक भिन्नताओं का होना स्वाभाविक ही है। भारत में यदि एक ओर बर्फ से ढंकी हुई व आकाश को छूती हुई पर्वतों की चोटियां और हिमाचल की लम्बी व ऊँची पर्वत-श्रेणियां हैं, तो दूसरी ओर समुद्र की लहरों से खेलते हुए, विस्तृत, उपजाऊ मैदान हैं। यदि एक ओर राजस्थान का शुष्क मरुस्थल है—जहाँ मीलों मानव का नाम तक नहीं है, तो दूसरी ओर सिन्धु—गंगा का अति जनसंख्या वाला मैदान भी है। इस देश में न केवल पहाड़ों और नदियों में ही भिन्नताएँ हैं, अपितु मिट्टी तक की विविधताएँ हैं। यहाँ दोमट और कछारी, काली और लाल विभिन्न प्रकार की मिट्टियाँ पाई जाती हैं।

भारत में प्रजातीय भिन्नताएँ भी हैं। इस प्रदेश में बहुत नाटे कद वाले नीग्रिटो प्रजाति के लोग रहते हैं और लम्बे कद वाले नार्डिक—प्रजाति के लोग भी हैं। यहाँ पीले या भूरे रंग वाले मंगोल रहते हैं तो चॉकलेटी रंग वाले प्रोटो—आस्ट्रेलॉयड प्रजाति के लोग भी। भारत के विभिन्न प्रदेशों में भाषा, रहन—सहन, खान—पान, वेश—भूषा, प्रथा, परम्परा, लोकगीत, लोकगाथा, विवाह—प्रणाली, जीवन—संस्कार, कला, संगीत तथा नृत्य में भी हमें अनेक रोचक व आकर्षक भेद देखने को मिलते हैं। इस देश में विवाह को धार्मिक संस्कार माना जाता है और एक सामाजिक समझौता मात्र भी। यहाँ यदि मुसलमान



भाई सिर ढंककर नंगे पैर नमाज पढ़ते हैं, तो ईसाई भाई सिर खोलकर व जूते पहने ही प्रार्थना में सम्मिलित हो जाते हैं। इस देश में वेद, उपनिषद्, गीता, रामायण, कुरान, बाइबिल और ग्रन्थ साहब सबको माथे से लगाया जाता है। यहाँ शास्त्रीय संगीत, लोक संगीत के साथ-साथ, फिल्मी संगीत व रीमिक्स संगीत आदि का प्रसार संगीत की विविधता को दर्शाते हैं। यहाँ भरत-नाट्यम, कथाकली, कथक, भाँगड़ा आदि विभिन्न प्रकार के नृत्य मिलते हैं। कला क्षेत्र में तुर्की, ईरानी, भारतीय व पाश्चात्य चित्रकला, मूर्तिकला व वास्तुकला के विविध रूप देखने को मिलते हैं। यही भारतीय संस्कृति की प्रकृति का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। यही भारतीय संस्कृति व समाज में पाई जाने वाली विभिन्नताएं अथवा विविधताएं हैं। विभिन्नता हर पहलू से दृष्टिगोचर होती है। अतएव एक सार्थक प्रयास हमेशा किया जाता रहा है, जिससे इन विभिन्नताओं को दरकिनार कर एक सूत्र में समता स्थापित कर सकें। कोठारी कमीशन कहता है कि यदि हमें एक सम समाज का निर्माण करना है, तो जनता के सब वर्गों को अवसरों की समानता प्रदान करनी होगी, ताकि सभी वर्ग प्रगति के पथ पर अग्रसर हो।

### 3-9 प्रगति की जांच

**1<sup>०</sup>** भारत के पांच प्राकृतिक भाग हैं

- 1) उत्तर का पर्वतीय प्रदेश
- 2) गंगा-सिन्धु का मैदान
- 3) दक्षिण का पठार
- 4) राजस्थान का मरुसिल
- 5) समुद्रतटीय मैदान

**2<sup>०</sup>** उत्तर में चीन, नेपाल और भूटान एवं पूर्व में म्यांमार (बर्मा) और पश्चिम बंगाल के पूर्व में बांग्लादेश स्थित है तथा उत्तर-पश्चिम में पाकिस्तान और अफगानिस्तान से इसकी सीमा जुड़ी हुई है।

**3<sup>०</sup>** द्रविड़ भाषा परिवार के अन्तर्गत तेलुगु, कन्नड़, तमिल, मलयालम एवं गोंडी, आदि भाषाएं आती हैं।

**4<sup>०</sup>** भाषायी सर्वेक्षणों से यह ज्ञात हुआ है कि भारत में लगभग 179 भाषाएं तथा 544 बोलियां प्रचलित हैं। कुछ विद्वानों का मत है कि भारत में 1,650 भाषाएं एवं बोलियां पाई जाती हैं।

5<sup>प</sup> विभिन्न संस्कृतियों का भारत में सह-अस्तित्व ही सांस्कृतिक बहुलतावाद के नाम से जाना जाता है। यहां सांस्कृतिक बहुलतावाद को अनेक रूपों में देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए, एक तरफ बहुत धनी, उच्च जाति और उच्च वर्ग के लोग हैं, तो दूसरी ओर अत्यधिक निर्धन, निम्न जाति के लोग हैं। विभिन्न जातियों, धर्मों, क्षेत्रों और भाषाओं से सम्बद्ध समूह सारे देश में फैले हुए हैं। धर्म, भाषा, क्षेत्र, प्रथा और परम्परा के आधार पर यहां अल्पसंख्यक समूह बने हुए हैं।

6<sup>प</sup> बौद्ध धर्म में हीनयान और महायान प्रमुख सम्प्रदाये ह

7<sup>प</sup> अधिकतर समाजों में व्यक्ति एक-दूसरे को विभिन्न वर्गों में वर्गीकृत करते हैं तथा इन वर्गों को उच्च से निम्न तक की विभिन्न श्रेणी में रखते हैं। इस प्रकार के वर्गीकरण की प्रक्रिया को सामाजिक स्तरण कहा जाता ह

8<sup>प</sup> कार्ल मार्क्स ने आर्थिक आधार को ही वर्ग संघर्ष का कारण माना व इसके आधार पर दो वर्ग बताएं पूंजीपति व श्रमिक या सर्वहारा वर्ग।

### 3.10 सन्दर्भ सूचि

शर्मा, शशि (२०१४) – राजनीतिक समाजशास्त्रा की रूपरेखा

<https://www.scribd.com/.../PHI-Learning-Monthly-Book-News-Bulletin>

Rao, M.S.(2004): Teaching of Geography, *Anmol Publications, New Delhi.*

\*\*\*\*\*

